HISTORY: CLASS-6: SUMMARY

अध्याय 1- आदिम मानव

आदिम मानव को सभ्य बनने में लाखों साल लग गए। खाद्य-संग्राहक से खाद्य-उत्पादक तक की अवस्था तक पहुंचने में आदमी को करीब 3,00,000 साल लगे।

मनुष्य खानाबदोश था, यानी आरंभ में आदमी खाना या भोजन और आश्रय की तलाश में झुंड बनाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते थे, उन्हें भोजन की तलाश में अन्य किसी स्थान पर जाना पड़ता था।

वे बड़े पेड़ों की पत्तों वाली शाखाओं के बीच अपने लिए शरणस्थान बना लेते थे। उन्हें दो चीजों का भय रहता था - मौसम का और जंगली जानवरों का। बाघ, शेर, चीता, हाथी और गैंडे - जैसे खूँखार जानवर जंगलों में घूमते-फिरते रहते थे (उन दिनों भारत में बड़ी संख्या में जंगल थे)।

औज़ार और हथियार

कठोर पत्थरों का आग पैदा करने एवं अन्य कई कार्यों में प्रयोग होता था, इन्हें तरह- तरह के आकार दिए जा सकते थे इन पत्थरों का प्रयोग औजार बनाने में होता था

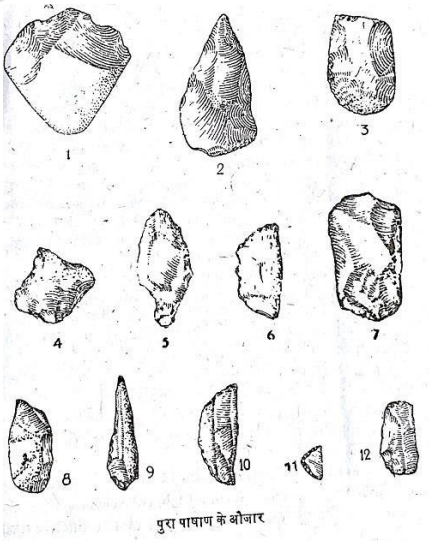

पुरा पाषाण के औजार

इस तरह की कुछ चीजें पजाब में सोहन नदी की घाटी में मिली हैं कुछ स्थानों में, जैसे **कश्मीर की घाटी में,' जानवरों की हड्डियों से भी औजार और हथियार बनाए जाते थे**।पत्थर के बड़े टुकड़ों से, जो आदमी की मुट्ठी में आ सकते हैं, हथौड़े, कुल्हाड़ियां आदि थे। आरंभ में बिना मूठ की कुल्हाड़ियों से ही पेड़ आदि की टहनियां काटी जाती थीं।

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

औजारों के उपयोग से आदमी को बड़ा लाभ हुआ। इनसे वह पेड़ों की टहनियां काटने, जानवर मारने, जमीन खोदने और लकड़ी तथा पत्थर को शक्ल देने में समर्थ हुआ। पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े, जो प्राय बड़े टुकड़ों के छीलन व कतरन होते थे, इतनी सावधानी से बनाए जाते थे कि उनमें पतली धार आ जाती थी, और तब बारीक काम के लिए उनका चाक या खुरचनी के रूप में उपयोग होता था अथवा उन्हें नोकदार बनाकर तीर या भाले के साथ बांध दिया जाता था।

पानी की सुविधा के लिए आदिम मानव प्रायः नदी या झरने के किनारे रहता था। मानव के आरंभिक इतिहास के हजारों वर्षों के एकमात्र अवशेष हैं पत्थर के अनगढ़ औजार जिनका इस्तेमाल शिकार तथा अन्य कामों में होता था। ये औजार अक्सर नदियों के कगारों में मिलते हैं जहां प्राचीन मानव जंगली जानवरों के शिकार की खोज में घूमता-फिरता था, अथवा गुफाओं और शिलाओं में रहता था ,इस युग में पत्थर के औजारों का बहुत अधिक इस्तेमाल होता था , इसलिए इसे **पाषाण युग** कहते हैं।

इस्तेमाल और औजारों के स्वरूप के आधार पर पाषाण युग को तीन अवस्थाओं में बांटा गया है: **प्राचीन (पुरा) मध्य, और उत्तर।**

वस्त्र

आदिम मानव को कपड़ों के विषय में अधिक जानकारी नहीं थी। गरमी के मौसम में बिना कपड़ों के चल जाता था। बरसात या ठंडक के दिलों में मारे हुए पशुओं की खाल, वृक्षों की छाल अथवा बड़े पत्तों का वस्त्रों के रूप में प्रयोग किया जाता था।

स्थिर जीवन का आरंभ

जैसे-जैसे आदमी को अपने आसपास की वस्तुओं का अधिक ज्ञान होता गया वैसे-वैसे अधिक सुविधा का जीवन बिताने की उसकी लालसा बढ़ती गई। इस समय पौधे उगाना और अन्न पैदा करना आदमी की सबसे महत्वपूर्ण खोज थी

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

उसने पता लगा लिया कि भूमि में बीज डालने और पानी देने से पौधे उगते हैं। इससे ही कृषि की शुरुआत हुई। यह एक महत्वपूर्ण खोज थी, क्योंकि मानव को अब भोजन की तलाश में एक जगह से दूसरी जगह भटकने की जरूरत नहीं थी।

मानव ने एक और खोज की उसे पता चल गया कि जंगली **पशुओं को पालतू बनाया जा सकता** है, यानी वह उन्हें अपने काम के लिए उपयोग में ला सकता है।

धातुओं की खोज

जब मनुष्य एक स्थान पर स्थायी रूप से बस गया और अन्न पैदा करने लगा तो उसने सर्वप्रथम पेड़ों तथा झाड़ियों को काटकर या जलाकर जमीन साफ़ की।

उत्तरपाषाण युग के औजार: नोकवार, चंद्रकला के आकार के और खुरचने वाले औजार आदि। इनमें कुछ औजारों का इस्तेमाल तेज दौड़ने वाले जानवरों को मारने के लिए होता था। इस युग में मनुष्य ने भोजन-संग्रह में दक्षता प्राप्त की।

पाषाण युग तथा नवपाषाण युग, जिस युग में मनुष्य ने छोटे-छोटे पत्थरों के औजारों के साथ-साथ धातु के औजारों का प्रयोग शुरू कर दिया, जिससे बर्तन बनाने में सहयोग मिला।

पहिया

एक अत्यंत महत्वपूर्ण खोज थी चाक या पहिया। पर कोई नहीं जानता कि पहिए की खोज किसने की, कहां की और कब की। लेकिन इस खोज से आदमी के जीवन में बड़ी तेजी से प्रगति हुई।

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now